(2) कार्य निर्धारण प्रविधि

[ASSIGNMENT TECHNIQUE]

कार्य-निर्धारण एक प्रयोगात्मक प्रविधि है। सामान्यत: इसका प्रयोग पाठ की समाप्ति के उपरान्त किया जाता है। कार्य-निर्धारण दो रूपों में किया जाता है—

प्रथम रूप परम्परागत रूप है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक छात्रों को घर से करके लाने के लिए कुछ कार्य निर्धारित कर देता है। इसे आजकल हम गृह-कार्य के नाम से पुकारते हैं। द्वितीय रूप आधुनिक रूप है। इसके अन्तर्गत घर से करके लाने के लिए कोई कार्य नहीं दिया जाता है, वरन् विद्यालय समय-चक्र के अन्तर्गत ही निर्धारित कार्य को पूरा करने के लिये एक विशेष कालांश की व्यवस्था होती है। छात्र इस कालांश के अन्तर्गत अध्यापकों की देख-रेख में निर्धारित कार्य को पूरा करते हैं।

आधुनिक युग में कार्य-निर्धारण की परम्परागत प्रणाली को दोषपूर्ण समझा जाता है। यह माना जाने लगा है कि घर से कार्य करके लाना वास्तविक शिक्षण प्रदान नहीं करता है। छात्र निर्धारण कार्य करने की वैज्ञानिक विधि से अपरिचित रहते हैं, वे योजनाबद्ध कार्य नहीं कर पाते हैं, क्योंकि घर पर कोई अच्छा पथ-प्रदर्शक उन्हें उपलब्ध नहीं होता है। फलत: यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यालय में ही अध्यापकों की देख-रेख तथा पथ-प्रदर्शन में छात्रों को निर्धारित कार्य को सम्पन्न करना चाहिये। यहाँ पर वह अपने माता-पिता की अवैज्ञानिक सहायता नहीं ले सकता है। यहाँ पर तो अत्यन्त कुशल एवं अनुभवी अध्यापक उसे प्रतिक्षण अत्यन्त मूल्यवान सहायता प्रदान करने को तत्पर रहते हैं।

परम्परागत कार्य-निर्धारण तथा आधुनिक कार्य-निर्धारण में इस अन्तर के अतिरिक्त एक अन्तर और भी है। कार्य-निर्धारण के परम्परागत रूप में बालकों को घर

Scanned by TapScanner

से करके लाने के लिये पुस्तक के कुछ पैराग्राफ, पृष्ठ, सवाल या प्रश्न, पाठ या अभ्यास-मालायें दे दी जाती थीं, किन्तु आधुनिक समय में ऐसा नहीं होता है। आधुनिक समय में प्रोजेक्ट, इकाई, समस्या या कोई क्रिया कार्य-निर्धारण के रूप में दे दी जाती है। इस प्रकार इन दोनों ही रूपों में मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक दोनों ही दृष्टिकोण से अन्तर है। परम्परागत कार्य-निर्धारण स्पष्टता, निश्चितता तथा छात्रों की रुचि का कोई भी ध्यान न दिया जाता था, जबकि आधुनिक कार्य-निर्धारण इनका पूरा-पूरा ध्यान रखता है।

(A) कार्य निर्धारण के उद्देश्य (Objectives of the Assignment)—कार्य-निर्धारण निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है—

(1) पाठ के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु।

(2) छात्रों को विभिन्न शैक्षणिक क्रियाओं में लिप्त रखने हेतु।

(3) अध्ययन करने के लिये उचित निर्देशन देने के लिये।

(4) छात्रों में स्वाध्याय की आदत का विकास करने के लिये।

(5) छात्रों को विधिपूर्वक अध्ययन करना सिखलाने के लिये।

(B) अच्छे कार्य-निर्धारण की विशेषतायें (Characteristics of Good Assignment)—अच्छे कार्य-निर्धारण में निम्नांकित विशेषतायें होती हैं—

(1) स्पष्टता।

(2) निश्चितता।

(3) रोचकता।

(4) प्रेरणा।

(5) सहकारी भावना।

(6) सार्थकता।

(7) पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध-बद्धता।

(8) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के साथ अनुरूपता।

(9) अन्तर्दृष्टि तथा सूझ का विकास करने की क्षमता।

(10) शैक्षणिक क्रिया।

(11) मानसिक स्तर के अनुसार कठिनाई स्तर।

(C) सुझाव (Suggestions)—कार्य का निर्धारण करते समय अध्यापक को निम्नांकित बिन्दुओं को सदैव ध्यान में रखना चाहिये—

(1) कार्य-निर्धारण करते समय अध्यापक को समय तत्व को सदैव ध्यान में रखना चाहिये। निर्धारित कार्य का समय छात्रों की आयु तथा मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में समय की मात्रा मनोवैज्ञानिक होनी चाहिये।

Scanned by TapScanner

(2) निर्धारित कार्य का कठिनाई स्तर भी छात्रों की आयु तथा मानसिक अवस्था को ध्यान में रखकर किया जाये।

(3) सामान्यतया कार्य का निर्धारण पाठ के अन्त में किया जाये। कार्य-निर्धारण आज के पढ़ाये पाठ में से ही दिया जाना चाहिये। कभी-कभी विशेष समस्या आ जाने पर कार्य का निर्धारण पाठ के बीच में भी किया जा सकता है।

(4) कार्य-निर्धारण का प्रमुख कार्य है छात्रों को प्रेरणा प्रदान करना।

इसलिये कार्य-निर्धारण मर्मस्पर्शी होना चाहिये। इससे छात्रों में कुछ कार्य करने की प्रेरणा जागृत करनी चाहिये।

(5) निर्धारित कार्य की अन्त में जाँच या मूल्यांकन अवश्य करना चाहिये।

(6) अध्यापक को निर्धारित किये जाने वाले कार्य का, उसके तथा उससे सम्बन्धित सहायक सामग्री का विस्तृत ज्ञान होना चाहिये।

Scanned by TapScanner